



# ॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥ श्रीकृष्णायन

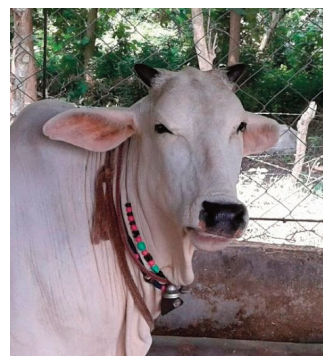


## गोसेवा से बनें पुण्य के भागीदार और गोधन से बचाएं पर्यावरण और बढ़ाएं रोजगार

**का** र्तिक मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी को गोपाष्टमी का पर्व मनाया जाता है। हिंदू समाज में इस पर्व की बड़ी मान्यता है। इस दिन लोग परिवार सहित गोमाता का पूजन कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनसे आशीर्वाद मांगते हैं। शास्त्रों के अनुसार गोमाता में सभी देवी-देवताओं का वास होता है, इसलिए उनकी पूजा, उपासना, सेवा-सुश्रूषा से सभी देवताओं का पूजन हो जाता है। जो व्यक्ति सुबह स्नान कर गोमाता को स्पर्श करता है, वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। गायों का



समूह जहां बैठकर आराम से सांस लेता है, उस जगह से सभी पाप खत्म हो जाते हैं। गाय को चारा खिलाने पर जो पुण्य मिलता है वो पुण्य हवन या यज्ञ करने के समान होता है। जिस घर में सभी सदस्यों के भोजन करने से पहले गाय के लिए खाना निकाला जाता है, उस परिवार में कभी भी अन्न और धन की कमी नहीं होती है।



### गोशाला में दान देकर बनें पुण्य के भागीदार

आज महानगरों में रहने वाले लोगों के जीवन में काम का बढ़ता बोझ और जगह की कमी के कारण उन्हें गोसेवा का सौभाग्य प्राप्त होना असंभव सा हो गया है। ऐसे में आप गोमाता की पूजा-अर्चना और अपनी अथाह सेवा भावना को दान के रूप में गोशाला में दान कर सकते हैं और





मोक्षदायनी गोमाता की सेवा के भागीदार बन सकते हैं। जैसे अपने बाल-बच्चे न होने पर हम दूसरे बच्चों को गोद ले लेते हैं, उसी प्रकार हरिद्वार में श्री कृष्णायन देशी गोरक्षाशाला में कई असहाय, बूढ़ी व रोगी गाएँ हैं। आप इन्हें गोद लेकर पुण्य कर्म कम सकते हैं। आप अपने सामर्थ्य के अनुसार घर के सभी सदस्यों के नाम से एक-एक गाय गोद लें और यदि सामर्थ्य न हो तो सभी लोग मिलकर एक गाय को गोद लें। एक गाय की सेवा में मात्र 3000 रुपए प्रति माह का खर्च आता है, ऐसे में यदि आप गोमाता को गोद लेकर वर्ष भर के खान-पान की जिम्मेदारी लेते हैं तो आपको पुत्री के पालन से भी अधिक धर्म व पुण्य लाभ होगा।

### गोमाता की महिमा

इसलिए गोमाता के पूजन की भारतीय समाज में बड़ी मान्यता रही है। इस दिन प्रातः काल में गडओं को स्नान आदि कराया जाता है तथा बछड़े सहित गाय की पूजा करने का विधान है। गोपाष्टमी के शुभ अवसर पर गोशाला में गोसंवर्द्धन हेतु गोपूजन का आयोजन किया जाता है। गोमाता पूजन कार्यक्रम में सभी लोग परिवार सहित उपस्थित होकर पूजा अर्चना करते हैं। सभी लोग गोमाता का पूजन कर उसके वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक महत्त्व को समझ कर गोरक्षा व गोसंवर्द्धन का संकल्प करते हैं। इस दिन गोमाता को सुसज्जित करके गंध पुष्पादि से उनका पूजन करना चाहिए। इसके पश्चात यदि संभव हो तो गायों के साथ कुछ दूर तक चलना चाहिए। कहते हैं ऐसा करने से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। साथ ही इस पावन अवसर पर गायों को भोजन कराना चाहिए तथा उनके चरण को मस्तक पर लगाना चाहिए। ऐसा करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है।

### गोपाष्टमी से जुड़ी कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोचारण लीला का आरंभ किया था, इसलिए इस तिथि को गोपाष्टमी कहा जाता है। गोवर्धन पूजा के दिन श्रीकृष्ण ने बृजवासियों को इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया था। गोपाष्टमी के दिन ही इंद्र ने श्रीकृष्ण के समक्ष अपनी हार स्वीकार की थी। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को नीचे उतार दिया था, तभी से गोपाष्टमी पर्व मनाया जाता

है। इस दिन गाय के साथ बछड़ों की भी पूजा होती है। इसलिए गोपाष्टमी पर्व को गोवर्धन पूजा के सात दिन बाद मनाया जाता है।

विदित हो कि गोमाता का दूध, घी, दही और यहां तक कि उनका मूत्र भी स्वास्थ्यवर्धक होता है। यह पावन पर्व हमें याद दिलाता है कि हम गोमाता के ऋणी हैं और हमें उनकी सेवा तन, मन और धन से करनी चाहिए। पौराणिक कथाओं में यह व्याख्या है कि किस तरह से भगवान कृष्ण ने अपनी बाल-लीलाओं में गोमाता की सेवा की है।

आधुनिक युग में यदि हम गोपाष्टमी पर गोशाला के लिए दान करें और गायों की रक्षा के लिए प्रयत्न करें तो गोपाष्टमी का पर्व सार्थक होता है और उसका फल भी प्राप्त होता है। तभी गोविंद-गोपाल की पूजा सार्थक होगी।

### गोबर भी बन सकता है आपकी कमाई का जरिया

गाय को भारत में 'माता' का पूजनीय स्थान प्राप्त है। हमारे कई प्राचीन ग्रंथों में इस बाबत संदर्भ मिलता है कि 'गोबर में लक्ष्मी जी का वास होता है'



और यह कथन मात्र हमारे शास्त्रों में ही वर्णित नहीं है बल्कि वैज्ञानिक तौर पर भी सत्य है। इस यथार्थ के महत्त्व को समझते हुए भारतीय वैज्ञानिकों ने 1953-54 में विकसित प्रथम बायो गैस संयंत्र का नाम भी 'ग्राम लक्ष्मी' रखा था, जिसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति भी मिली थी। वास्तविकता यह है कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों के रचनाकार महान दूरदर्शी और वैज्ञानिक थे। अपने ज्ञान के आधार पर उन्होंने सामान्य व साधारण नियम-कानून एक धार्मिक क्रिया के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत



## बहुउपयोगी गोमूत्र अर्क

गोमूत्र से निकाले जाने वाले अर्क को गोमूत्र अर्क कहते हैं। अभी तक इसके कोरोना को रोकने के कोई ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं। लेकिन यह बात सिद्ध है कि शरीर की इम्यूनिटी मजबूत करने में इसका अहम योगदान है। अगर प्रतिदिन इसका सेवन किया जाए तो हम अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बना सकते हैं।

गोधन अर्क पवित्र होने के साथ-साथ कीटनाशक के रूप में भी काम आता है। आइए जानें किन-किन रोगों में यह अर्क रामबाण साबित हो रहा है।

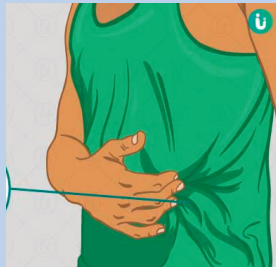
### त्वचा के लिए

गोधन अर्क सफेद दाग या कुष्ठ रोग के लिए भी एक प्रभावी उपचार माना जाता है। इस रोग से बचाव के लिए बावची/बाकुची को गोधन अर्क में मिलाकर पीस लें और सफेद दागों पर रात को सोते समय लगाएं तथा सुबह त्वचा को गोधन अर्क से ही धोएं। ऐसा रोजाना करने से कुछ दिनों में ही प्रभाव दिखने लगता है और दाग बिल्कुल ठीक हो जाते हैं। इसके अलावा,

यह शरीर में अत्यधिक खुजली के लिए बहुत प्रभावी सिद्ध हुआ है। खुजली से बचाव के लिए जीरे में गोधन अर्क मिलाकर इसके लेप को शरीर पर लगाना चाहिए। यह खाज-खुजली को ठीक करता है। गोधन अर्क अन्य त्वचा की बीमारियों जैसे एग्जिमा, सोरायसिस आदि में भी फायदेमंद है।

### प्लीहा (तिल्ली) रोग में

गोधन अर्क, तिल्ली रोग की बीमारी के बढ़ने पर इस्तेमाल होने वाली औषधि है। इसके निर्माण के लिए 50 ग्राम गोधन अर्क में नमक मिलाकर रोजाना प्रयोग से शीघ्र फायदा पहुंचता है। यदि आप जॉइंट पेन से पीड़ित हैं, तो दर्द वाली जगह पर गोधन अर्क



की सिंकाई करने से आराम मिलता है।

### लिवर के स्वास्थ्य में

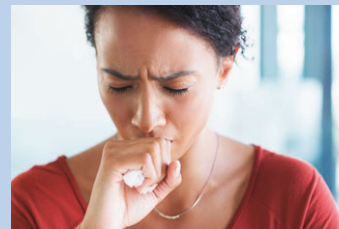
गोधन अर्क एक ब्लड प्यूरीफायर है। यह ब्लड को फिल्टर करता है और शरीर में शुद्ध ब्लड को पहुंचाता है, जिससे शरीर से बीमारियां दूर रहती हैं। यह लिवर की सूजन को कम करने में एक कारगर उपाय है।

### मोटापा कम करने के लिए

गोधन अर्क को मोटापा कम करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे इस्तेमाल करने के लिए एक गिलास पानी में चार बूंद गोधन अर्क के साथ 1 चम्मच नींबू का रस और 2 चम्मच शहद मिलाकर रोजाना पीने से लाभ मिलता है।



### गले के इलाज के लिए



गोधन अर्क में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। इसे गले में खराश के इलाज के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे कुल्ला करने पर बैक्टीरिया से लड़ने में मदद मिलती है।

### पेट की समस्या में

गोधन अर्क पेट की समस्याओं के लिए बहुत लाभदायक है। अगर पेट में गैस की शिकायत है, तो रोजाना सुबह खाली पेट गोधन अर्क के साथ नींबू का रस और नमक मिलाकर पी सकते हैं। ऐसा करने के एक घंटे बाद ही नाश्ता लें। कब्ज रोगी को गोधन अर्क दिन में थोड़ा-थोड़ा 3 से 4 बार लेना चाहिए।

### गोधन से करें पर्यावरण की रक्षा

हिंदू रीति-रिवाजों के मुताबिक जब किसी की मृत्यु होती है तो उसके दाह-संस्कार में प्रति मानव के हिसाब से जलावन के तौर पर दो पेड़ कट जाते



किए ताकि मानव समाज पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनके वैज्ञानिक ज्ञान व अनुभवों का लाभ उठाते हुए और प्राकृतिक पर्यावरण को बिना हानि पहुंचाए एक स्वस्थ जीवन बिता सके।

इसलिए आज भी गोबर को शुद्ध मानते हुए धार्मिक अनुष्ठानों व पूजा-अर्चना के समय कई तरह से उपयोग किया जाता है। पूजास्थल लीपने, दीप स्थापन और पंचामृत बनाने के अलावा सभी भारतीय ग्रामीण घरों को नियमित रूप में गोबर से लीपने की प्रथा आज भी सर्वत्र विद्यमान है। आज गोबर में लाख के प्रयोग से कई मूल्यवर्धित वस्तुएं बनाई जा रही हैं। जैसे गमला, लक्ष्मी-गणेश, कलमदान, कूड़ादान, मच्छर भगाने वाली अगरबत्ती, मोमबत्ती एवं अगरबत्ती स्टैंड आदि। गोपालन का कार्य गोधन की सेवा करने के साथ जीविकार्जन के लिए कमाई का साधन भी बन गया है।





## गोशाला की प्रमुख गतिविधियां

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति (हरिद्वार) की एक नई शाखा बनहारी (रानी घाट) में खुल गई है। करीब दस हजार देशी गोमाताओं की सेवा-क्षमता से लैस इस नई गोशाला के खुलने से अब और अधिक संख्या में देशी गायों की सेवा रक्षा की जा सकेगी।

### उपलब्धियां

- गोमाता के भोजन और पोषण के लिए इस बार तीन सौ टन भूसा खरीदा गया है ताकि देशी गोवंश को वर्ष भर पौष्टिक आहार मिलता रहे।
- गोशाला के निकट रहने वाले निवासियों को इस आपातकाल के समय मुफ्त राशन का वितरण किया गया।
- गोमाताओं के लिए आवश्यक सुविधाओं से लैस 1500 देशी गायों के लिए 2 बड़े टीन शेड का निर्माण।
- देशी गाय के संरक्षण और देखभाल के लिए एक ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन।

### नई योजनाएं हुई साकार

- उत्तराखंड में पिली पड़ाव गोशाला
- रानीघाटी में बन्हेरी गोशाला
- गैंडीखाता, हरिद्वार में दो हजार देशी गायों के बैठने के लिए टीनशेड की व्यवस्था।

### सभी दानदाताओं से अपील

कोराना वायरस की इस महामारी का असर सभी लोगों पर हुआ है। अर्थव्यवस्था से लेकर कामकाज तक पर इसका व्यापक असर हुआ है। इसके असर से सभी प्राणी प्रभावित हैं। हजारों गोमाताओं की सेवा के लिए जो दान आप दानवीरों द्वारा किया जा रहा था, वह इस समय अति-आवश्यक है। क्योंकि गोरक्षकों और गोमाताओं के भोजन का निर्वाह करना भी जरूरी है। हमारी आप सभी प्रबुद्धजनों और दानवीरों से यही अपील है कि संकट की इस घड़ी में धैर्य धारण करके सुरक्षित रहें और दान करते रहें क्योंकि संकट में दान देने वालों का प्रभु भी साथ देता है।

इस समय हमें आपके सहयोग की अति-आवश्यकता है, अतः आप स्वयं आगे बढ़ें और अपने परिचितजनों को भी गोसेवा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कम से कम एक गोमाता की सेवा का संकल्प लेकर ईसीएस फॉर्म भरकर मासिक/वार्षिक अपना सहयोग दें।

हैं जबकि उन पेड़ों को तैयार होने में कम-से-कम 8 साल का समय लगता है। ऐसे में दाह-संस्कार में जलावन के तौर पर विकल्प की दिशा में बढ़ते हुए यदि गाय के गोबर से बनी लकड़ी (गोकाष्ठ) का प्रयोग किया जाए तो इस से पर्यावरण संरक्षण भी होगा क्योंकि लकड़ी में जहां 15 प्रतिशत तक नमी रहती है वहीं गोबर से बनी लकड़ी में महज 2 प्रतिशत तक नमी होती है।

इतना ही नहीं लकड़ी जलने से कार्बन डाई ऑक्साइड निकलती है जबकि गोकाष्ठ से 40 प्रतिशत तक ऑक्सीजन की मात्रा विमुक्त होती है। इसीलिए तो यज्ञ के आयोजनों में गोबर के उपलों (गोयठा) का प्रयोग होता है ताकि वातावरण शुद्ध हो सके। 15

किलो गोकाष्ठ का उत्पादन तो बिना दूध देने वाले गोवंश के 60 किलो गोबर से भी हो सकता है लेकिन लकड़ी का कोई विकल्प नहीं है सिवाय पेड़ों की कटाई के।

ऐसे में यदि समय रहते हम इस विकल्प को नहीं अपनाएंगे तो वह दिन दूर नहीं जब पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वृक्षारोपण के प्रयास भी काम नहीं आएंगे। दूसरी ओर अगर हम गोकाष्ठ के विकल्प को आजमाएंगे तो इस से गोवंश संरक्षण के साथ-साथ लघु स्तरीय उद्योगों को भी बल मिल पाएगा। जब वृक्ष बचेंगे तो वर्षा भी अधिक होगी, भू-गर्भ का जल भी बचेगा और धरती पर हरियाली भी कायम रहेगी।



अन्य शाखाएं एवं सेवा प्रकल्प

### उत्तराखंड

**श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति**  
गांव-बसोचांदपुर (गैंडीखाता)  
जिला-हरिद्वार, उत्तराखंड  
पिन कोड-246663

**श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति**  
पोस्ट ऑफिस, पीली पड़ाव,  
जिला - हरिद्वार

**बायो-सीएनजी प्लांट**  
पोस्ट ऑफिस, नौरंगाबाद,  
जिला - हरिद्वार  
khad@krishnayangauraksha.org

### उत्तर प्रदेश

गांव-सबलगाढ़ (भागूवाला)  
जिला - बिजनौर, उत्तर प्रदेश  
पिन कोड-246732

गांव- बरला  
टोल टैक्स के पास, बरला हापुड़ हाईवे  
जिला - मुजफ्फरनगर ( उत्तर प्रदेश)  
पिन- 246732

### मध्य प्रदेश

**आदर्श गोशाला**  
लाल टिपारा, ग्वालियर, मध्य प्रदेश  
पिन कोड-474006

**श्री देवा भागीरथी गोशाला खेरीघाट**  
रामगढ़, जिला - खरगोन ( मध्य प्रदेश)

**श्री कृष्णायन देशी गोरक्षा गोलोक धाम सेवा समिति**  
राम जानकी मंदिर, रानीघाट ( बरहाना )  
जिला - ग्वालियर ( मध्य प्रदेश)

**स्वामी ईश्वर दास जी महाराज**  
(अध्यक्ष)  
मोबाइल: 9412902268  
**स्वामी गणेशानंद जी महाराज**  
(सचिव)  
मोबाइल: 8958942681



## श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलाक धाम सेवा समिति

प्रधान कार्यालय  
हरिपुर कलां निकट प्रेम विहार चौक, हरिद्वार  
(उत्तराखंड) फोन: +91 9760202306

Visit us at : [www.krishnayangauraksha.org](http://www.krishnayangauraksha.org)  
E-mail : [enquiry@krishnayangauraksha.org](mailto:enquiry@krishnayangauraksha.org)  
Facebook : [www.facebook.com/krishnayangauraksha](http://www.facebook.com/krishnayangauraksha)